Volume-3, No. I, Feb-2016, pp. 79-81

समसामयिक युग में हिन्दी भाषा का महत्व एवं उपययोगिता

डॉ. महिमा गुप्ता, असिस्टेंट प्रोफेसर,
3rd एमेटी इन्स्टीट्यूट आफ एजूकेशन एमेटी यूनिवर्सिटी,
नोएडा उत्तर–प्रदेश भारत।

सार

भाषा व्यक्ति के भावाभिव्यक्ति का सर्वोकृष्ट साधन है। जीवन के प्रत्येक पग पर व्यक्ति भाषा का सही सम्बल पाकर जीवित रहता है। भावों का उद्वेग यदि निष्कृति का पथ न पा सकें तो न जाने बेचारे कितने व्यक्तियों को असाधारण पीड़ाओं का शिकार बनना पड़ जाये। भावों का यह उद्वेलन ही व्यक्ति की सृजन क्षमता को प्रेरित कर उसे किसी रचना के लिए विवश कर देता है। **प्रसाद** का **आँसू** यदि भाषा न पाता तो वे कैसे लिख सकते हैः–**जो धनीभूत पीड़ा थी, मस्तक में स्मृति सी छाई। दुर्दिन में आँसू बनकर, वह आज बरसने आई।।**

पशु पंक्षी बोलते है, उनकी बोलियां हृदय के भावों को दूसरों पर प्रकट करने के लिए ही होती है। परन्तु उनके द्वारा केवल सुख–दुख और घृणा–प्रेम के साधारण मनो–विचार व्यक्त हुआ करते है। वास्तव में सभी जीवधारी अपने मनोगत विचार दूसरों पर प्रकट किया करते है किन्तु ऐसा करने में मनुष्य अपनी श्रेष्ठा के अनुकूल अन्य से विशेषता रखता है। हाँ, संसार में जितने कार्य हो रहे है। उन सबके विचार उस बोली से प्रकट नहीं किये जाते। इस कारण पशु–पंक्षी की बोली सारी आवश्यकताओं को पूर्ण करने बोली नहीं होती, वह अस्पष्ट, अधुरी और अव्यक्त होती है। मनुष्य इसी कमी से बचा है। स्वभावतः वह पशु–पंक्षी से उन्नत दशा में सोचने के अतिरिक्त सभी विषयों पर विचार कर सकता है और अनुभावित विचारों को दूसरों पर साफ–2 प्रकट कर सकता है। उसकी ऐसी विशिष्ट क्रिया का साधन भाषा है। भाषा ही उसे भावों को व्यक्त करने में समर्थ बनाती है। कहावत है' **एक हजार मील की यात्रा भी एक कदम के साथ शुरू होती है।**

मुख्य शब्द– भाषा, मातृभाषा, भक्तिकाल, विश्व हिन्दी सम्मेलन, लोकभाषा।

हिन्दी भाषा ऐसी भाषा है, जिसने स्वतंत्रता के आन्दोलन में भी पूरे देश को एकजुट किया, जिसने ऐसे किसी आन्दोलन का कभी विरोध नहीं किया, जो उसके विरोध में उठा, जिसने सदैव प्रेम के गाने गाए, जिसने घृणा और द्वेष को प्रश्रय नहीं दिया, हिन्दी भाषा के महान कवि साहित्यकारों जैसे विद्यापति, कबीर, सूर, तुलसी, से लेकर आधुनिक कवियों तक ने अपनी लेखनी चलायी जिसकी छटाएं बोलियों और लोकगीतों में भरपूर दिखायी देती है। जिसमें अधिसंख्य भारतवासियों का दिल धड़कता है। जिसके नाम पर फिल्म उद्योग, करोड़ों अरबों का व्यापार करता है। हिन्दी भारतीय संचार माध्यम की प्रमुख भाषा है।

चाइना के बाद विश्व में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा हिन्दी भाषा है हिन्दी भाषा व्यापार, पर्यटन, फिल्म–उद्योग, गीत–संगीत, मीडिया में अपना वर्चस्व बनाये हुए है। जो स्थान पश्चिम में हॉलीवुड का है। वहीं भारत में बॉलीवुड का है। "आवारा हूँ" फिल्म से भारत की पहचान जुड गयी थी।

हिन्दी भाषी राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उच्च स्तर पर नियुक्ति पा रहे है। हिन्दी भाषी कम्प्यूटर के माध्यम से हिन्दी भाषा में भी अपने कार्य कर सकते है। जैसा कि साक्षात प्रमाण आज का विषय व आयोजन है।

हिन्दी भाषा की उपयोगिता इस कथन से मानी जा सकती है गांधी जी ने कहा था–**समूचे हिन्दुस्तान के साथ व्यवहार करने के लिये इसको भारतीय भाषाओं में से एक ऐसी भाषा की जरूरत है, जिसे आज ज्यादा से ज्यादा तादाद में लोग–जानते हो, समझते हो, बाकी के लोग जिसे झट सीख सकतें वह भाषा हिन्दी (हिन्दुस्तानी) ही हो सकती है।**

हिन्दुस्तान की महान भाषाओं की अवगगणना की वजह से हिन्दुस्तान को बेहद नुकसान हुआ है उसका कोई अंदाजा हम नही कर सकते है। जब तक जनसाधारण को अपनी बोली में लड़ाई के हर पहलू और कदम को अच्छी तरह से नहीं समझाया जाता, तब तक उनसे यह उम्मीद कैसे की जा सकती है कि वे उसमें हाथ बटायेंगे।

आवाज करने से आवाज नहीं मिटती है, चुप्पी से मिटती है।

शुभ विचार करना एक बात है अमल करना अलग बात है।

जो मातृभाषा की अवगणना करता है, वह अपनी माता की करता है।

जो हमारे हृदय में है उसे कभी न कभी बाहर निकलना ही है।

हिन्दी प्रेम की भाषा के रूप में अलंकृत है। भक्तिकाल से लेकर अब तक हमारे कानों में हिन्दी के शब्दों के सांस्कृतिक घुंघरू बज रहे है। जहाँ एक ओर दिव्यचक्षु कवि सूरदास की वीणा के साक्ष्य पदगायन हमारे अतःकरण को शान्ति व आहलाद से भर देते है। वहीं दूसरी मानस की चौपाईयां अवधि भाषा का उदात्त तत्व समाज को सौंपंती है। लोकभाषाओं और बोलियों ने हिन्दी भाषा को समृद्ध किया है। हिन्दी, एल.डब्ल्यू.सी. यानि कि लैग्वेज ऑफ वाईड सर्कयुलेशन की भाषा हो गयी है ।

हिन्दी भाषा भाव प्रवाह की संवाहिका है। विश्व की सभी भाषाओं में हिन्दी का विशेष स्थान है। हिन्दी भाषा शास्त्र के पन्नों से निकलकर जन–जन की भाषा हो गयी है। हिन्दी भाषा आत्मीयता की भाषा है। संस्कृति की संवाहिका है, मात्र सम्पर्क सूत्र नहीं है। बॉलीवुड फिल्मों और विशेष रूप से उनके सुगम तथा मनमोहक संगीत ने विश्व में दूरदराज तक भारत की पताका फहराई है। यदि फिल्मों का यह मधुर संगीत न होता तो सम्भवत विश्व के इन दूरदराज के देशों में भारत की पहचान न बनी होती। उदाहरण स्वरूप दक्षिण अफ्रीका में हिन्दी शिक्षा संघ' हिन्दी की कक्षाओं का प्रकाशन करता है साथ ही हिन्द वाणी' नाम से हिन्दी का रेडियों स्टेशन भी चलाता है। त्रिनीदाद में 'हिन्दी निधि' नामक संस्था, हिन्दी भाषा बोलने में सक्षम न होने पर भी अंग्रेजी भाषा में इस संस्था का कार्य संचालित करती है।

1977 में अटल बिहारी वाजपेयी का संयुक्त राष्ट्र संघ को दिया गया भाषण हो या 1975 में श्रीमती इन्दिरा गांधी की प्रेरणा से राष्ट्रभाषा प्रचार समिति वर्धा के सहयोग से हुए विश्व हिन्दी सम्मेलन। जिसमें हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की भाषा बनाने की मांग की गयी थी। हिन्दी भाषा की उपयोगिता व महत्व ही दर्शाते है। अहिन्दी भाषी प्रधान मंत्रियों पी.वी. नरसिंह राव, एच.डी. देवगौड़ा ने भी समय–2 पर हिन्दी भाषा में उद्बोधन देकर हिन्दी भाषा के महत्व को समझा। देवगौडा जी ने तो हिन्दी सीखने के लिए एक शिक्षक रखा था। वर्तमान प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने तो हिन्दी भाषा में बार–बार भाषण देकर हिन्दी भाषा के महत्व को रेखांकित किया है। दिल्ली के माननीय मुख्यमंत्री व अन्य नेताओं ने जनसाधारण में अपनी पहचान व पकड़ मजबूत करने के लिए हिन्दी भाषा का माध्यम अपनाया हुआ है और बड़ी सरलता से जनमानस में अपनी पहचान दर्ज की है। हिन्दी के दो प्रबल समर्थकों पंडित मदन मोहन मालवीय तथा अटल बिहारी वाजपेयी जी को भारत रत्न देने में भी कहीं न कहीं यहीं बात परिलक्षित होती है। वर्तमान सरकार के विभिन्न प्रयास जैसे मेक–इन–इण्डिया, स्किल डेवलपमेंट मिशन, सांस्कृतिक सम्बन्धों की मजबूती तथा आधार भूत ढाँचे के विकास में सहयोग जैसे मुद्दों पर हिन्दी व हिन्दी भाषियों की महत्वपूर्ण भूमिका रहने वाली है। 10 जनवरी 2015 को विश्व हिन्दी सम्मेलन में विदेशमंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के शब्दों में यदि कोई स्पेनिश में बोलता है, जर्मन में बोलता है, अरेबिक में बोलता है, फ्रेंच में बोलता है, तो मुझ पर यह बाध्यता मत करिये कि मैं अंग्रेजी में बात करूं। फिर मैं भी हिन्दी में बात करूंगी ताकि वह यह प्रभाव लेकर, जाये कि भारत की भाषा हिन्दी है, अंग्रेजी नहीं और मैंने उसी दिन कहा कि इन हर भाषाओं में से हिन्दी के भाषांतरकार अगर नहीं उपलब्ध है तो तैयार करों।आज लगा कि भारत अपने स्वर में बोल रहा है।

पहला विश्व हिन्दी सम्मेलन चालीस साल पहले नागपुर में हुआ उसके बाद क्रमशः मारीशस, दिल्ली , त्रिनीदाद, लन्दन, सूरीनाम, न्यूयार्क, जोहान्सबर्ग, भोपाल में हुआ ।

10वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 से 12 सितम्बर 2015 भोपाल, भारत के आयोजन से पता चलता है कि हिन्दी भाषा, भारतीय साहित्य, संस्कृति सामाजिक मूल्यों एवं विविध परम्पराओं को प्रतिनिधित्व करती हुई वैश्विक उंचाईयों को छुती जा रही है। हिन्दी भाषा, प्राचीन और आधुनिक युग की खाई को पाटते हुए बहुत तेजी से सूचना एवं प्रौद्योगिकी, विज्ञान और तकनीकी की भाषा और माध्यम के रूप में तेजी से उभर रही है। वाणिज्य के क्षेत्र में विदेशी व मल्टीनेशनल कम्पनियां कारोबार बढ़ाने के लिये हिन्दी भाषा को अपना रही है। हमारे देश की प्रमुख व्यापार सम्पर्क भाषा हिन्दी अब विश्वव्यापी हो चुकी है। साहित्य से अधिक व्यापार और मनोरंजन के उपक्रमों ने इसे वैश्विक धरातल पर खड़ा कर दिया है।

नागरी प्रचारिणी सभा काशी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागदक्षिण भारत हिन्दी प्रचार, मद्रास असम राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, गुवाहटी बम्बई, हिन्दी विद्यापीठ बम्बई, महाराष्ट्र भाषा सभा पुणे राष्ट्र भाषा प्रचार समिति वर्धा हिन्दी देवधर, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद हिन्दी केन्द्र–1970; भुवनेश्वर केन्द्र–2003; अहमदाबाद केन्द्र–2006; हैदराबाद केन्द्र–1976 मैसर केन्द्र–1988; गुवाहटी केन्द्र–1978 शिलांग केन्द्र–1976; दीनापुर केन्द्र 2006 हिन्दी भाषा की उपयोगिता को सिद्ध कर रहे है।।

विज्ञापन लिखे या दिखाये अंग्रेजी में जाते है किन्तु भाषा आमजन हिन्दी ही होती है भारत एक खोज,"महाभारत", "रामायण" "हम लोग", "कौन बनेगा कराडपति", "बिग ब्रदर" जैसे कार्यक्रमों की बदौलत अहिन्दी भाषी लोग भी हिन्दी बोलने समझने लगे है।

हिन्दी भाषा राष्ट्रीय अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर स्वीकार्यता के मार्ग पर दौड़ रही है। हिन्दी न बोल पाने वाली सोनिया गांधी, जयललिता ने हिन्दी में अपने भाषण देने शुरू किये है। संसद से सड़क तक के लिये हिन्दी का हाथ ही चाहिए। हिन्दी हिमालय बन चुकी है।

बाकी जगहों पर भले ही हम हिंदी को लेकर चिंतित हो, परन्तु एक क्षेत्र में यह बहुत क्रांतिकारी ढंग से आगे बढ़ रही है! वह है, नामकरण। ठीक है कि हिंदीभाषी क्षेत्रों में नाम पहले भी हिन्दी में ही रखे जाते थे परन्तु अब नामों को लेकर हम इतने जागरूक हो गये, वैसा दो–तीन पीढ़ी पहले तक नहीं होता था। तब नाम की अच्छी ध्वनि, उपनाम के साथ उसी लय, उसकी प्रभावोंत्पादकता और अनूठेपन को लेकर इतना गौर भी नहीं किया जाता है, परन्तु अब अभिभावक इन सब पर ध्यान देते है। और यही है हिन्दी भाषा की शक्ति। इस तरह ये नाम हिंदी को समृद्ध कर रहे है जरूरत है कि हम नामों के अर्थ जाने और अपने बच्चों को संदर्भ सहित अर्थ बताएं।

तुम प्यासे हो तो कुंए की खुदाई के लिए इन्तजार मत करो।

निष्कर्ष

उपर्युक्त तथ्यों के आलोक में कहा जा सकता है कि हिन्दी भाषा से दूरी नहीं बनायी जा सकती है चीन के बीजिंग के सबसे बड़े विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग दूसरे हिन्दी विभागों से बडा है। हिन्दी भाषा एक भाषा समष्टि का नाम है, एक आधुनिक भारतीय आर्य भाषा है। जो उत्तर में नेपाल की तराई से लेकर दक्षिण में रायपुर और खंडवा तक, पूर्व में मिथिला और भागलपुर के जिलों से लेकर पश्चिम में बाडमेर और जैसलमेर तक बोली जाती है। देश के कई बड़े प्रदेश, उत्तर प्रदेश, उत्तराखण्ड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, हिमांचल , हरियाणा, दिल्ली, के साथ–साथ अंडमान निकोबार तथा अरूणांचल जैसे क्षेत्र भी है। जहाँ की प्रधान भाषा हिन्दी है। प्रो0 सुब्रमणी, प्रो0 रेमण्ड पिल्लई, प्रो0 ब्रज वि0 लाल, महेन्द्र चन्द्र शर्मा, डॉ0 जीत नाराइन, हरीदेव सहतु सूर्य प्रसाद वीरे, चित्रा गजादीन आदि लेखक हिन्दी भाषा की उपयोगिता को सिद्ध कर रहे है। केशव चन्द सेन, गांधी, बोस, तिलक, रंगनाथ, राम चन्द्र मोटरि, सत्यानाायण, गोपाल स्वामी आयंगर, विनोबा, रामास्वामी अय्यर, राहुल सांस्कृत्यापन, मदन मोहन मालवीय, **समसामयिक युग में हिन्दी भाषा का महत्व एवं उपययोगिता** के साक्ष्य है।

सन्दर्भ

1. "परिचय:: केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय". http://hindinideshalaya.nic.in/hindi/introduction/intro.html.
2. http://www.ethnologue.com/language/hin
3. http://www.censusindia.gov.in/Census_Data_2001/Census_Data_Online/Language/Statement1.aspx
4. http://www.census.gov/prod/2013pubs/acs-22.pdf
5. कीथ ब्राउन, सारा ओगिल्वी (२०१०). *Concise Encyclopedia of Languages of the World [दुनिया की भाषाओं का संक्षिप्त विश्वकोश]*. एल्सेवियर. प॰ 498. आई॰ऍस॰बी॰ऍन॰ 9780080877754. https://books.google.co.in/books?id=F2SRqDzB50wC.
6. "अपने घर में कब तक बेगानी रहेगी हिन्दी" (एचटीएम). वेब दुनिया. http://hindi.webduniya.com/miscellaneous/special07/hindiday/0709/13/1070913069_1.htm. अभिगमन तिथि: 2008.
7. "हिन्दी सामग्री का उपयोग इंटरनेट पर 94% बढा: गूगल". दैनिक जागरण. 19 अगस्त 2015. http://www.jagran.com/technology/tech-news-hindi-content-consumption-on-internet-growing-at-94-google-12754900.html. अभिगमन तिथि: 19 अगस्त 2015.
8. "गूगल पर हिंदी में कुछ भी खोजिए". दैनिक जागरण. 19 अगस्त 2015. http://www.jagran.com/news/national-hindi-content-consumption-on-internet-growing-at-94-google-12753992.html. अभिगमन तिथि: 19 अगस्त 2015.
9. Google. "Error: no `|title=` specified when using {{Cite web}}". https://www.google.co.in/?hl=hi. अभिगमन तिथि: 10 July 2015.
10. "फोटो देखकर हिन्दी में अनुवाद कर देगा गूगल". दैनिक जागरण. 30 जुलाई 2015. http://www.jagran.com/news/national-google-will-translate-photographs-into-hindi-12670257.html. अभिगमन तिथि: 19 अगस्त 2015.